



# Computer Proficiency Certification Test

Notations :

- Options shown in **green** color and with  icon are correct.
- Options shown in **red** color and with  icon are incorrect.

Question Paper Name:	Remington Gail 22nd February 2020 Shift 2 T1
Subject Name:	Remington GAIL
Creation Date:	2020-02-22 17:34:45
Duration:	25
Calculator:	None
Magnifying Glass Required?:	No
Ruler Required?:	No
Eraser Required?:	No
Scratch Pad Required?:	No
Rough Sketch/Notepad Required?:	No
Protractor Required?:	No
Show Watermark on Console?:	No
Highlighter:	No
Auto Save on Console?:	No

## Mock

Group Number :	1
Group Id :	2549892303
Group Maximum Duration :	10
Group Minimum Duration :	10
Show Attended Group? :	No
Edit Attended Group? :	No
Break time:	1
Mandatory Break time:	Yes
Group Marks:	0
Is this Group for Examiner?:	No

## Hindi Typing Test

Section Id :	2549893311
Section Number :	1
Section type :	Typing Test
Mandatory or Optional:	Mandatory
Number of Questions:	1
Number of Questions to be attempted:	1
Section Marks:	0

Sub-Section Id: 2549893324  
Question Shuffling Allowed : No

Question Number : 1 Question Id : 25498938091 Question Type : TYPING TEST

एक बार की बात है, अकबर और बीरबल शिकार पर जा रहे थे। अभी कुछ समय हुआ था कि उन्हें एक हिरण दिखा। जल्दबाजी में तीर निकलते हुए अकबर अपने हाथ पर घाव लगा बैठा। अब हालात कुछ ऐसे थे कि अकबर बहुत दर्द में था और गुस्से में भी।

Restricted/ Unrestricted: Unrestricted  
Paragraph Display: Yes  
Evaluation Mode: Standard  
Keyboard Layout: Remington  
Show Details Panel: Yes  
Show Error Count: Yes  
Highlight Correct or Incorrect Words: Yes  
Allow Back Space: Yes  
Show Back Space Count: Yes

## Actual

Group Number : 2  
Group Id : 2549892304  
Group Maximum Duration : 15  
Group Minimum Duration : 15  
Show Attended Group? : No  
Edit Attended Group? : No  
Break time: 0  
Group Marks: 0  
Is this Group for Examiner?: No

## Hindi Typing Test

Section Id : 2549893312  
Section Number : 1  
Section type : Typing Test  
Mandatory or Optional: Mandatory  
Number of Questions: 1  
Number of Questions to be attempted: 1  
Section Marks: 0

Sub-Section Number: 1  
Sub-Section Id: 2549893325  
Question Shuffling Allowed : No

Question Number : 2 Question Id : 25498938092 Question Type : TYPING TEST

कौन बलवान है और कौन दुर्बल, इसकी परीक्षा करने की कसौटी यह होनी चाहिये कि कौन कितना सहिष्णु है और कौन कितना असहिष्णु है।

जो तनिक-सी विपरीतता सामने आते ही उबल पड़ता है या डरने, कांपने लगता है, समझना चाहिये कि यह दुर्बल किस्म का मनुष्य है। अन्तः चेतना की दयनीय स्थिति इससे बढ़ कर और क्या हो सकती है कि उसे हवा के झोंके हलके तिनके की तरह किधर भी उड़ा ले जाय और वह वैसे किसी झोंके का प्रतिरोध न कर सके। भारी और वजनदार वस्तुओं का मूल्य और टिकाऊपन इसलिये होता है कि वे अवरोधों को सहन करते हुए अपनी राह पर, अपनी दिशा में ठीक तरह चलती रह सकती हैं। रेलगाड़ी और वायुयान यदि हवा के प्रवाह की दिशा में चलते-उड़ने लगें तो फिर उनमें बैठने वालों का ईश्वर ही रक्षक है। हर मनुष्य की आकृति एक दूसरे से भिन्न है और प्रकृति भी। हर आदमी की मनःस्थिति एक-सी नहीं होती। उसके सोचने का अपना तरीका होता है और निर्णय करने का अपना ढंग। उसमें सुधार-परिवर्तन भी होता है पर आवश्यक नहीं कि हर व्यक्ति दूरदर्शी और विचारशील ही हो। साथ ही यह भी है अनिवार्य नहीं कि मनुष्यों की विचारधारा, रुचि, प्रकृति और मनःस्थिति एक जैसी हो। इस प्रकृति प्रदत्त भिन्नता को हमें ध्यान में रखना होगा और यह मान कर चलना होगा कि समन्वयशीलता और सहिष्णुता की नीति अपना कर यथासंभव अधिक से अधिक ताल-मेल बिठा सकने में ही आंशिक सफलता मिल सकती है और उसी कामचलाऊ समझौते के आधार पर जीवन को गतिशील रखा जा सकता है। हमारी ही आकृति या प्रकृति के सब लोग बन जाय, यह सोचना बेकार है। हमारा ही नियंत्रण, अनुशासन या परामर्श परिवार में या पड़ोस में शिरोधार्य किया जाना चाहिये, यह आकांक्षा थोड़े अहंकार का विज्ञापन करती है। हम दूसरे के शुभ-चिंतक और परामर्शदाता हो सकते हैं और उन्हें श्रेष्ठ पथ पर चलाने के लिये अपनी सूझबूझ के अनुसार भरसक प्रयत्न कर सकते हैं, यह अपनी मर्यादा है। इस मर्यादा में रह कर ही हमारी सज्जनता अक्षुण्ण रह सकती है, इसके आगे बढ़ कर जब हमें दूसरों को माध्य करने जितना दबाव डालते हैं और आतंकवादी आधारों को अपनाते हैं तो यह भूल जाते हैं कि यह मनुष्य की मर्यादाओं का उल्लंघन है। आक्रमण को रोकना आत्म-रक्षा की दृष्टि से सही है, पर अपना अनुयायी बनाने के लिये बाध्य करना मानवीय अधिकारों के अपहरण के बराबर है। सभी मनुष्य हमारे जैसे विचार के नहीं हो सकते हैं और न हर परिस्थिति हमें प्रिय लगने वाली हो सकती है। ऐसी दशा में सहिष्णुता ही अपनाती पड़ती है यदि ताल-मेल न बैठता हो तो उन परिस्थितियों से हट जाने या हटा देने का रास्ता अपनाया जा सकता है, पर निरंतर टकराव का कोई प्रयोजन नहीं। सुधार यदि अपनी मर्जी जैसा नहीं हो सकता तो इसे दुर्भाग्य मान बैठना और खीजने या असंतुलित होने लगना व्यर्थ है। हमें व्यक्तियों अथवा परिस्थितियों की विपरीतता देखकर आवेश ग्रस्त होना चाहिये। क्रोध में आना या हताश हो बैठना दोनों ही मनुष्य की आंतरिक कमजोरी की निशानी हैं। परिस्थितियों से धैर्य और औचित्य के आधार पर निपटा जाना चाहिये और सफलता को अनिवार्य न मान कर अपने प्रयास एवं कर्तव्य की सीमा में संतोष करना चाहिये।

**Restricted/ Unrestricted:** Unrestricted

**Paragraph Display:** Yes

**Evaluation Mode:** Standard

**Keyboard Layout:** Remington

**Show Details Panel:** Yes

**Show Error Count:** Yes

**Highlight Correct or Incorrect Words:** Yes

**Allow Back Space:** Yes

**Show Back Space Count:** Yes